

मिच्छामः Çāk. Ch. 19, 15. अप्यस्ति ते शकुन्तलादर्शनं प्रति कुतूहलम् 39, 9. अप्यस्ति शकुन्तलादर्शने कुतूहलम् Çāk. Bōht. 29, 4. तदस्माकमप्यत्र विषये मत्कुतूहलं वर्तते Pāṇāt. 97, 10. Git. 1, 8. निजकुतूहलविरचितं धूर्तसमागमनाम प्रकसनम् aus eigenem Verlangen d. i. zu meinem eigenen Vergnügen Dhūrtas. 67, 12. mit dem obj. comp.: देवराजकुतूहलात् R. 1, 48, 19. कुतूहलेन mit Gier, gierig: पपावनास्वादितपूर्वमाप्नुगः कुतूहलेनेव मनुष्यशोषिताम् Ragh. 3, 54. — 2) was Neugier —, Theilnahme erregt, eine unterhaltende Erscheinung, Spass: पश्य पश्य कुतूहलम् Pāṇāt. 124, 9. पर्यटनदृष्टनिककुतूहलकथनेन 163, 22. — Nach AK. 1, 1, 7, 31. H. 926 und Mēd. 1. 131 = कुतुक, कौतुक, कौतूहल (nach ÇKDr. = अपूर्ववस्तुदिदत्ताद्यतिशय d. i. Neugier); nach H. an. 4, 288 = अद्भुत; nach H. an. und Mēd. = शस्त oder प्रशस्त. Nach ÇKDr. und Wils. in den beiden letzten Bedd. adj. — In diesem Worte scheint wie in कुतुक das pron. interr., viell. sogar कुतम्, enthalten zu sein; हल bed. hier wohl Ruf, Geschrei (vgl. कोलाहल, हलाहल). — Vgl. कारणकुतूहल.

कुतूहलवत् (von कुतूहल) adj. neugierig, Interesse für Etwas habend: कुतूहलवानपि निसर्गशालीनः स्त्रीजनः Mālav. 31, 7.

कुतूहलितं adj. von कुतूहल gaṇa तारकादि zu P. 5, 2, 36.

कुतूहलिन (wie eben) adj. neugierig, der eine ungewöhnliche Erscheinung mit Theilnahme verfolgt: न ज्ञातु स्यात्कुतूहली M. 4, 63. मुकुत्तश्च वदतं तं तत्रादित्यप्रभा नृपः । बुद्धिं प्रवेशयामास फलभूतिं कुतूहली ॥ Kāthās. 20, 42. द्वये गीते च माधुर्यं तयोस्तस्मै निवेदितम् । ददर्श सानुजो रामः शुश्राव च कुतूहली ॥ Ragh. 13, 65. 13, 21.

कुतूषा (1. कु + तूष्) n. Name einer Pflanze, Pistia Stratiotes Lin., Hār. 112.

कुतेर्निमित्त (कुतस् + नि) adj. welchen Grund habend: कुतेर्निमित्तः शोकास्ते R. 2, 74, 17. — Eine unlogische Zusammensetzung, da कुतस् nur vor dem abl. निमित्तात् an seinem Platze sein würde; vgl. den folg. Art. und अतेर्निमित्तम्.

कुतूमूल (कुतस् + मूल) adj. welchen Ursprung habend: कुतूमूलमिदं दुःखम् MBu. 1, 6205.

कुतूथ (astr.) der 15te Joga Ind. St. 2, 273.

कुत्र (von 1. कु) adv. P. 5, 3, 10. 1) wo? wohin? क्वासि कुत्रासि R. 5, 34, 21. कुत्र मे शिशुः Pāṇāt. 100, 19. Hit. 10, 17. Buṅg. P. 9, 9, 5. मया तौ शतौ प्रमथवौ कुत्र भुवि ज्ञाता Kāthās. 1, 63. एषा साभरणा कुत्र गच्छति Vet. 25, 5. BRAHMA-P. in LA. 36, 18. प्रवृत्तिः कुत्र कर्तव्या Hit. 1, 21. — 2) in welchem Falle? wann? तेजसा सह ज्ञातानां वयः कुत्रोपपद्यते Pāṇāt. 1, 372. भाविन्यर्थे प्रमाणाभावात्कुत्र किं समाधातव्यम् Hit. 110, 12. — 3) कुत्र — क्व wo (dieses) — wo (jenes) d. i. wie weit ist dieses von jenem entfernt, wie wenig stimmt dieses zu jenem: कुत्राशिषः श्रुतिमुखा मृगतृक्षिद्रयाः केदं कलेवरमशेषरुजो विरोहः Buṅg. P. 7, 9, 25. — 4) mit अपि irgendwo: कुब्जेन मृतः कृत्स्नस्यः कुत्राप्यासादितः Pāṇāt. 262, 11. irgendwohin, Gott weiss wohin Mārk. P. 8, 120. — 5) mit चिद् a) = कस्मिंश्चित् adj.: कुत्रचिदरण्ये in irgend einem Walde Pāṇāt. 236, 6. 260, 8. कुत्रचिज्जलाशये 213, 18. — b) wo oder wohin es auch sei; irgendwo. irgendwohin: कुत्रो चिद्यस्य समीपे राणा नरो नृषदने RV. 5, 7, 2. कुत्रो चिद्रावो वसतिर्वेनजाः 6, 3, 3. कुत्रो चिद्याममश्चिनी दधाना 7, 69, 2. प्रसुप्तमिव चान्यत्र क्रीडन्तमिव कुत्रचित् R. 5, 1, 5. कुत्रचित्पिपासाकुलितेन भ्रमता

Pāṇāt. 253, 15. 142, 12 (lies कुत्रचित् st. कुत्रचितं). Mit einer vorang. Neg. nirgends, nirgendswohin: असुरेभ्यो भयं नास्ति धुष्माकं कुत्रचित्क्वचित् MBu. 3, 10953. अहं त्वत्सकाशादागता न कुत्रचिदपि निर्गता Pāṇāt. 36, 22. — c) कुत्रचित् — कुत्रचित् in einem Falle — im andern Falle, bisweilen — bisweilen: विशिष्टं कुत्रचिदीजं स्त्रीयोनस्त्वेव कुत्रचित् M. 9, 34. — d) यत्र कुत्र च bei wem, er mag dieser oder jener sein: यत्रोभयं कुत्र च सो ऽप्यमङ्गलः Buṅg. P. 8, 8, 22. — e) यत्र कुत्रचित् wo es auch sei, hier oder dort Schol. zu Kap. 1, 69. — Vgl. अकुत्रा.

कुत्रत्य (von कुत्र) adj. wo ansässig? wo sich aufhaltend Buṅg. P. 5, 10, 17.

कुत्स s. u. कुतस्य.

कुत्स m. 1) N. pr. eines R̥shi, mit dem Bein. Ārguneja; ein Schützling Indra's, zu dessen Bestem der Gott namentlich den Cūshṇa erschlägt, RV. 1, 63, 3. 121, 9. 4, 16, 12. 6, 23, 3. 7, 19, 2. 10, 99, 9. वदन्तुत्समांनुनिं शनः क्रतुः 8, 1, 11. 1, 174, 5. 173, 4. उरू ष सरथं सारथ्ये क्रिन्तुः कुतस्य सूर्यस्य सौतो 6, 20, 5. 5, 29, 4. AV. 4, 29, 5. Von Indra verfolgt RV. 1, 53, 10. 2, 14, 7. 4, 26, 1. Vākh. 5, 2. — 2) N. pr. eines Āṅgīrasa, Verfassers mehrerer RV.-Lieder (1, 94. fgg. 9, 97, 45. fgg.), Āṅv. Ça. 12, 12. — pl. die Nachkommen —, das Geschlecht des Kutsa P. 2, 4, 65. Vop. 7, 14. कुत्सा एते रुर्यश्चायं प्रूपमिन्द्रे सहेः देवज्ञातमियाणाः RV. 7, 28, 5; nach Śā. = कुर्वीणाः (vgl. Nir. 3, 11). इकारात्तं चैवापायं संप्रगायति कुत्साः Lāṭṭ. 7, 8, 19. — 3) Blitz, Donnerkeil Naigh. 2, 20. Nir. 3, 11. — Vgl. पुहकुत्स, कौत्स, कौत्सायन.

कुत्सकुशिकिका (von कुत्स + कुशिक) f. die Heirath zwischen den Kutsa und Kuçika P. 4, 3, 125, Sch.

कुत्सन (von कुतस्य) 1) adj. schmähend; subst. Schmähwort, ein tadelnder Ausdruck P. 2, 1, 53. — 2) n. das Schmähn, Tadeln Çādar. im ÇKDr. P. 4, 1, 147. 8, 1, 8. देवतानां च कुत्सनम् M. 4, 163. — 3) f. आ Ausdruck der Geringschätzung: द्वातीति गतिकुत्सना कदातीति द्वातिकुत्सना Nir. 2, 3.

कुत्सपुत्रं und कुत्सवर्त्सं (कुत्स + पुत्र und वत्स) m. Sohn des Kutsa: अत्रो यदस्युत्तये कुत्सपुत्रं प्रावो यदस्युत्तये कुत्सवत्सम् RV. 10, 103, 11.

कुत्स्य, कुत्स्यति (med. Dvārup. 33, 24) schmähen, seinen Tadel über Jnd oder Etwas ausdrücken, seine Geringschätzung an den Tag legen: कुत्सयन्धर्तारान् MBu. 2, 2121. भीमं कुत्सयित्वा वचोभिः 1, 195. नैतच्छक्यं तया वेदुं लक्ष्यमित्येव कुत्सयन् 5286. 14, 794. पूजयेदशं नित्यमग्याञ्चैतदकुत्सयन् M. 2, 54. Jāṅg. 1, 31. MBu. 13, 5010. 14, 1311. न कुत्सयाम्यहं किञ्चित् 3, 13723. Ausnahmsweise auch nach der 1sten Klasse: शंशुमैकापदो तत्र कुत्सतो धृतराष्ट्रम् 2, 2298. 2303. — कुत्सित geschmähet, was getadelt wird, woran ein Makel haftet AK. 3, 2, 4. 3, 4, 100, 135. H. 1442. Nir. 1, 20. P. 2, 1, 53. MBu. 1, 5288. 13, 413. पङ्कचापि च देवर्षे ये चान्ये कुत्सिता नराः 2222. अकुत्सिते कर्मणि यः प्रवर्तते Çāntiç. 2, 28. Vet. 3, 9. — Wir halten कुत्स्य für ein denom. von कुत्स (nach dem Woher u. s. w. fragen) wie कथ्य von कथा oder कथम्.

— अभि dass.: सो ऽमात्यमध्ये भरतो जननीमभ्यकुत्सयत् R. 2, 75, 2.

— अयव dass.: अयवकुत्सित n. Tadel (Gegens. पूजा) Nir. 1, 4.

कुत्सला f. die Indigo-Pflanze (नीली) Çādar. im ÇKDr.

कुत्सवर्त्स s. unter कुत्सपुत्र.